साहित्य विविधा एक विमर्श

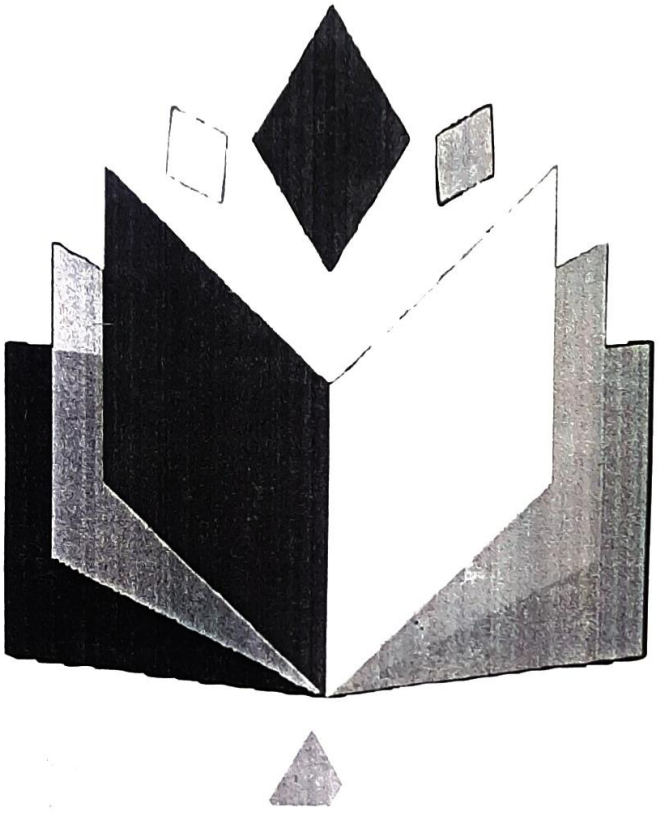

संपादक

डॉ. नानासाहेब जावळे, डॉ. मनोहर जमदाडे

Savitribai College of Arts
ID No. PU/AN/.../58/1999
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher and author]

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
आशापुर, सारनाथ, वाराणसी-221 007
मो०: (+91) 9450540654, 8669132434
E-mail : abspublication@gmail.com

ISBN : 978-93-89908-30-5

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2020

मूल्य : 395.00 रुपये मात्र

आवरण पृष्ठ
शिवम् तिवारी (भारत)

शब्द-संयोजन
शिखा ग्राफिक्स (भारत)

मुद्रक :
पूजा प्रिण्टर्स (भारत)

Sahitya Vividha : Ek Vimarsh

Edited By : Dr. Nanasaheb Jawale, Dr. Manohar Jamdade

Price : .Three Hundred Ninety Five

आदरणीय माता-पिता
एवं
गुरुजनों
को
सादर समर्पित
जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

अनुक्रमणिका

1. हृदय परिवर्तन की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी'
   - **डॉ. मनोहर जमदाडे**
2. बाल मनोविज्ञान की अप्रतिम कथा 'ईदगाह'
   – **डॉ. नानासाहेब जावळे**
3. बेरोजगार युवकों की व्यथा 'जिंदगी और गुलाब के फूल'
   - **डॉ. मनोहर जमदाडे**
4. देश-विभाजन और बदलती मानसिकता की कहानी 'युद्ध'
   - **डॉ. मनोहर जमदाडे**
5. शिक्षक-अभिभावक का उत्कृष्ट संवाद 'मिसेज डिसूजा के नाम पत्र'
   - **डॉ. नानासाहेब जावळे**
6. परोपकारिता से प्राप्त दैन्यावस्था का जीता-जागता उदाहरण 'सरजू भैया'
   – **डॉ. संजय दवंगे**
7. मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्ति 'भय'
   - **प्रा. देवेंद्र बहिरम**
8. यात्रावृत्त का अप्रतिम उदाहरण 'एक बूँद सहसा उछली'
   - **प्रा. थोरात बबन किसन**

Savitribai College of Arts
ID. No.
PU/AN/A/
58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda Dist. Ahmednagar

9. संकटमोचन बने मित्र की कहानी 'अकबरी लोटा'
- डॉ. राजेंद्र खैरनार

10. पिता-पुत्र संघर्ष की मीमांसा 'प्रतिशोध'
- डॉ. राजेंद्र खैरनार

11. 'जूही की कली' कविता में प्रकृति का मानवीकरण
- डॉ. मनोहर जमदाडे

12. महाकरुणा से ओतप्रोत 'मैं नीर भरी दुख की बदली!'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

13. विरह व्यथा का सुंदर विवेचन 'कालिदास'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

14. भ्रष्ट राजनीति की पोल-खोल 'रोटी और संसद'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

15. धार : किसान जीवन का विदारक चित्रण
- डॉ. मनोहर जमदाडे

16. बाजारवादी संस्कृति पर कडा प्रहार 'आदमी को प्यास लगती है'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

17. आम आदमी के अंधकारमय जीवन पर प्रकाश 'रौशनी के उस पार'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

18. आदिवासी संस्कृति से लगाव 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा'
- डॉ. मनोहर जमदाडे

19. किताबों की उपेक्षा : 'किताबें झांकती हैं बंद अलमारी के शीशों से'
- डॉ. मनोहर जमदाडे

20. बहन के प्रति व्यक्त कृतज्ञता 'नींव की ईंट हो तुम दीदी'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

21. संवाद कौशल (भाषण कला) – **प्रा. अच्युत शिंदे**

22. सूत्र संचालन - **प्रा. नामदेव शितोळे**

23. समूह चर्चा – **डॉ. शीतल माने**

24. युनिकोड की जानकारी – **डॉ. जयराम गाडेकर**

25. इंटरनेट एक अविष्कार - **डॉ. सारिका भगत**

26. हिंदी सॉफ्टवेयर की जानकारी - **डॉ. जयराम गाडेकर**

27. स्ववृत्त लेखन - **प्रा. रवींद्र ठाकरे**

28. निबंध-लेखन - **प्रा. अनिल झोळ**

29. विज्ञापन लेखन - **डॉ. प्रमोद पडवळ**

30. वाक्य शुद्धिकरण - **प्रा. नानासाहेब गोफणे**

Savitribai College of Arts ★ Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda. Dist. Ahmednagar ★
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

22.

सूत्र संचालन

- प्रा. नामदेव शितोळे

कार्यक्रम किसी भी प्रकार का हो उस कार्यक्रम को किस प्रकार प्रसारित किया जाता है इस पर उसकी सफलता निर्भर होती है | कार्यक्रम की शुरुआत अगर अत्यंत रोचक ढंग से होती है तो श्रोताओं की उत्सुकता बढ़ जाती है | कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उसमें साज-सजावट, साउंड आदि के साथ-साथ उस कार्यक्रम का संचालन करनेवाला सूत्र संचालक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | सुंदर तथा सुचारू ढंग से कार्यक्रम प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों की झलक सूत्र संचालक सुनाता है| सूत्र संचालन कला के साथ-साथ एक शास्त्र भी है | जिसमें सूत्र संचालक केवल दो वक्ताओं के तथा दो कार्यक्रमों के बीच का केवल दुआ ही नहीं तो मंच और श्रोताओं के बीच संवाद बनानेवाला सेतु होना चाहिए | उसके संवाद में रंजकता के साथ समर्पक शब्दों का प्रयोग भी होना चाहिए |

कार्यक्रम के स्वरूप के अनुसार सूत्रसंचालक को अपनी शैली बदलनी चाहिए | किसी संगीत की मैफील का संचालन करना हो तो वहां वह भाव प्रकट करनेवाली शैली होनी चाहिए | कोई व्याख्यान या वैचारिक भाषण हो तो वहा संदर्भो के साथ-साथ उपयुक्त शब्दों का प्रयोग होना चाहिए | साथ ही सभा के अनुसार आवेशयुक्त, उत्साहवर्धक शैली में सूत्रसंचालन करना चाहिए| सामने बैठे हुए श्रोतागण किस प्रकार के हैं, इसका भी ध्यान सूत्रसंचालक को होना चाहिए |

किसी भी कार्यक्रम का संचालन करने से पहले सूत्रसंचालक को कार्यक्रम का समय, विषय, स्थान, तिथि, वक्ता, कलावंत, श्रोतावर्ग आदि सभी के बारे में जानकारी होनी चाहिए| साथ ही उस कार्यक्रम की पत्रिका भी समज में आनी चाहिए| कार्यक्रम के स्थान के बारे में पता होना चाहिए | कार्यक्रम प्रारंभ होने से पहले एक बार वहां जाकर आना चाहिए | उद्धोषक को कार्यक्रम की संहिता पहले ही तैयार करनी चाहिए इसमें आवश्यक संदर्भ, काव्यपंक्तियां आदि के बारे में पता होना चाहिए लेकिन इसमें संदर्भ या काव्यपंक्तियों का अनाश्यक प्रयोग भी नहीं होना चाहिए | साथ ही कार्यक्रम में आनेवाली संभाव्य समस्याओं का अंदाजा भी पहले से ही लगाना चाहिए |

जब एक कार्यक्रम समाप्त होता है और दूसरा कार्यक्रम शुरू होता है तो इन दो कार्यक्रमों के बीच के समय में उद्धोषक आगे प्रसारित होनेवाले प्रमुख कार्यक्रमों

की जानकारी देता है या कोई वाद्य संगीत देकर बीच के समय में श्रोताओं का मनोरंजन करता है | साथ ही अगले दिन के प्रसारित होनेवाले मुख्य कार्यक्रमों की सूचना दी जाती है | कभी-कभी उद्धोषक को क्विज मास्टर का भी रोल करना पडता है| इसके संचालन में उद्धोषक को विशेष सावधानी लेनी पडती है | यदि कोई प्रेक्षक गलत उत्तर भी देता है तो तुरंत उसके उत्तर को गलत न कहकर दूसरे से उत्तर मांगना चाहिए | यहां उद्धोषक का सामान्य ज्ञान अच्छा होना आवश्यक है | साथ ही उसने उत्तर जानने की आतुरता नहीं दिखलानी चाहिए | प्रश्न को समझाकर उत्तर देने का पर्याप्त समय देना चहिए |

सूत्रसंचालन के प्रकार -

१) शासकीय कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
२) दूरदर्शन पर होनेवाले कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
३) रेडिओ पर होनेवाले कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
४) राजकीय कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
५) सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
६) बच्चों के कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
७) शैक्षणिक कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन
८) महान व्यक्तियों के पुण्यतिथि या जन्मदिन का सूत्रसंचालन
९) वार्षिक स्नेह संमेलन का सूत्रसंचालन
१०) तिथि विशेष का सूत्रसंचालन
११) दूरदर्शन पर होनेवाली चर्चाओं का सूत्रसंचालन

इन कार्यक्रमों के अलावा सूत्रसंचालक को अन्य कार्यक्रमों का भी सूत्रसंचालन करना पडता हैं| उद्धोषक को खेल-कूद, राजनीति, साहित्य, संगीत, शिक्षा, संशोधन, लोक कला, परंपरा के साथ-साथ ऐतिहासिक और भौगोलिक जानकारी रखनी पडती हैं | तभी वह कार्यक्रम के साथ सही न्याय कर सकता हैं | सूत्र संचालक को आनंद तब मिलता है जब उसके द्वारा संचालित कार्यक्रम प्रेक्षकों के कसोटी पर खरा उतरता है | कार्यक्रम खत्म होने के बाद प्रेक्षक अपनी राय प्रकट करते हैं | प्रेक्षकों का मत यह साबित करता है की उद्धोषक कितना लोकप्रिय है | अत: हर एक उद्धोषक के पास अच्छे सूत्रसंचालन के गुण होना आवश्यक है |

एक आदर्श सूत्र संचालक के गुण निम्नानुसार होते हैं –

सुस्पष्ट कं[illegible], स्वर माधुर्य, कल्पकता, स्वाराघात की जानकारी, विषय विविधता की जानकारी, [illegible] अध्ययनशीलता, सहजता, बुद्धिमत्ता, भाषा-शैली, समय सूचकता आदि

Savitribai College of Arts, Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
ID No. PU/AN/A/ 58/1999
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

सूत्र संचालन का नमूना

आपके महाविद्यालय में हिंदी दिवस मनाया जानेवाला है अत: इस कार्यक्रम का सूत्रसंचालन इस प्रकार कर सकते हैं|

१) स्वागत : सुस्वागतम् सुस्वागतम् सुस्वागतम्

मंच पर विराजित परम श्रद्धेय प्राचार्य, सभी श्रद्धेय गुरुजन और मेरे सभी सहपाठियों | सर्व प्रथम मैं रजत पाटील आज १४ सितम्बर के इस हिंदी दिवस के समारोह में आप सबकी गरिमामयी उपस्थिति को प्रणाम करता हूँ|

२) स्वागत गीत : कार्यक्रम के आरंभ में ही हमारे हिंदी विभाग की छात्राएँ स्वागत गीत प्रस्तुत करेगी ..... धन्यवाद मित्रों!

३) प्रस्तावना : कार्यक्रम की प्रस्तावना करने के लिए मैं हमारे महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. आशिष श्रीवास्तव जी को आमंत्रित करता हूँ|

'है राष्ट्र के नाम हिंदी का उपहार
अपनी भाषा से करे हम प्यार |'

४) दीप प्रज्वलन : अब मैं प्रमुख अतिथि से नम्र निवेदन करता हूँ कि वे आज के हिंदी दिवस समारोह का दीप प्रज्वलन करें ...

'शुभं करोति कल्याणम् आरोग्यम् धनसंपदा |
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपकाय नमोऽस्तुते ||
दीपो ज्योती परं ब्रहम दीपो ज्योतीर्जनार्दन
दीपो हरतु में पापं संध्यादीप नमोऽस्तुते ||'

५) परिचय : अब मैं आज के समारोह के प्रमुरव अतिथि का परिचय करने के लिए मेरे मित्र संदीप सोलंकी को आमंत्रित करता हूँ|

६) सम्मान : अब मैं हमारे महाविद्यालय के प्रधानाचार्य जी से बिनती करता हूँ कि वे हमारे इस हिंदी दिवस समारोह के प्रमुख अतिथि का पुष्पगुच्छ देकर सम्मान करे|

७) छात्रों के मनोगत : इस हिंदी दिवस के अवसर पर कुछ छात्र अपने विचार प्रस्तुत करना चाहते हैं मैं सबसे पहले आमंत्रित करता हूँ.....

८) प्रमुख अतिथि का भाषण : अब मैं प्रमुख अतिथि डॉ. अलोक शर्मा जी से नम्र निवेदन करता हूँ कि वे अपने विचारों से हमारे छात्रों को लाभान्वित करें |

'हिंदी हिंद की शान है, हिंदी हिंद की जान है,
देश की पहचान है, मानवता की जान है,
हिंदी हिंद की शान है |'

९) अध्यक्षीय भाषण : अब मैं आज के समारोह के अध्यक्ष महोदय से नम्र निवेदन करता हूँ कि अपना अध्यक्षीय मतंव्य प्रस्तुत करें |

१०) आभार ज्ञापन : कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन के लिए हमारें महाविद्यालय के हिंदी विभाग की छात्रा कुमारी मधुराणी जगताप को निमंत्रित करता हूँ|

'विविधता में एकता का संदेश है हिंदी
विश्व में मानवता का भेष है हिंदी
नहीं घृणा सिखाती प्यार है हिंदी
चराचर को जोडती ज्ञान का सागर है हिंदी |'

आधार ग्रंथ :

1. साहित्य विविधा : संपादक - हिंदी अध्ययन मंडल, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे प्रकाशन:- परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई

प्रा. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे
हिंदी विभाग प्रमुख,
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय
पिंपळगाव पिसा, तहसील – श्रीगोंदा,
जि.-अहमदनगर महाराष्ट्र

Savitribai College of Arts
ID. No.
PU/AN/A/
58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar